लोक प्रशासन की प्रकृति :→ लोक प्रशासन की प्रकृति को दो अलग - अलग उपागमों से अभिव्यक्त किया है :—

① समग्र दृष्टिकोण :- इस उपागम के अनुसार, लोक प्रशासन उन सभी गतिविधियों का समावेश करता जो दिए गए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए की जाती हैं। दूसरे शब्दों में लोक प्रशासन प्रबंधकीय, तकनीकी, लिपिकीय और हस्ती कामों का कुल योग है। इस प्रकार इस उपागम के अनुसार, प्रशासन ऊपर से नीचे तक सभी व्यक्तियों की गतिविधियों से बना है। एल-डी. व्हाइट और डिमॉक इसी उपागम को मानते हैं।

② प्रबंधकीय दृष्टिकोण :→ इस परिप्रेक्ष्य में लोक प्रशासन में केवल प्रबंधकीय गतिविधियाँ शामिल होती हैं। तकनीकी, लिपिकीय और हस्ती गतिविधियाँ इसमें शामिल नहीं होती; जो स्वभाव से गैर-प्रबंधकीय गतिविधियाँ है। अतः इस उपागम के अनुसार, प्रशासन सिर्फ ऊपर के व्यक्तियों की गतिविधियों से बनता है। साइमन, स्मिथबर्ग, थॉमसन और लूथर गुलिक जैसे विचारक इस उपागम को मानते हैं।

लोक प्रशासन का क्षेत्र :→ लोक प्रशासन के उद्देश्यों को लेकर दो उपागम हैं :→

① POSDCORB दृष्टिकोण :→ लोक प्रशासन के क्षेत्र से संबंधित इस उपागम की वकालत लूथर गुलिक ने की थी। वे मानते थे कि प्रशासन सात तत्वों से बनता है। उन्होंने इन तत्वों को इस प्रथमाक्षरी

नाम 'POSDCORB' में जोड़ा है, जिसका प्रत्येक वर्ण प्रशासन के एक तत्व को दर्शाता है।

P- Planning (योजना)
O- Organising (संगठित करना)
S- Staffing (कर्मचारियों को रखना)
D- Directing (निर्देश करना)
CO- Coordinating (तालमेल करना)
R- Reporting (सूचना देना)
B- Budgeting (बजट बनाना)

(2) विषय वस्तु दृष्टिकोण :→ POSDCORB सिर्फ प्रशासन के उपकरणों का प्रतिनिधित्व करता है जबकि वास्तविक प्रशासन एक अलग ही चीज है। प्रशासन का वास्तविक मर्म लोगों को दी जाने वाली विभिन्न सेवाओं से बनता है, जैसे, रक्षा स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा सामाजिक सुरक्षा आदि। इन सेवाओं की अपनी विशिष्टीकृत तकनीक होती है जो सामान्य POSDCORB तकनीक में नहीं होती। दूसरे शब्दों में, हर प्रशासनिक एजेंसी का, उसकी विषयवस्तु के कारण अपना एक स्थानीय POSDCORB होता है।

इसप्रकार POSDCORB उपागम तकनीक निर्देशित है जबकि विषय निर्देशित होने के। यह लोक प्रशासन के बुनियादी तत्व यानि 'विषयवस्तु के ज्ञान' की उपेक्षा करता है। लेकिन POSDCORB उपागम और विषय वस्तु उपागम एक-दूसरे को

विरोध नहीं करते बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। लेविस मेरियम ने कहा भी है:- "लोक प्रशासन एक दोधारी औजार है, जैसे कैंची की दो धारें। एक धार POSDCORB द्वारा समेटे जाते हैं तो दूसरी धार विषय वस्तु के ज्ञान से।

शिक्षा की एक शाखा के रूप में लोकप्रशासन की पाँच शाखाएँ हैं→

1. संगठित सिद्धांत और व्यवहार
2. लोक कर्मचारी प्रशासन
3. लोक वित्त प्रशासन
4. तुलनात्मक एवं विकास प्रशासन
5. लोक नीति विश्लेषण।

लोक प्रशासन के अध्ययन के विभिन्न उपागम :→

1. दार्शनिक उपागम
2. कानूनी उपागम
3. ऐतिहासिक उपागम
4. केस पद्धति उपागम